स्वप्न की कार्य-पद्धतियाँ (Dream Mechanisms) —

स्वप्न कार्य या स्वप्न रचना से तात्पर्य उन कार्य-पद्धतियों से है, जिसके द्वारा स्वप्न के अव्यक्त विषय स्वप्न के व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। फ्रायड ने ऐसे पाँच स्वप्न-रचनाएँ या कार्य पद्धतियों के बारे में बतलाये हैं —

- संक्षेपण (Condensation)
- विस्थापन (Displacement)
- प्रतीकीकरण (Symbolization)
- नाटकीयकरण (Dramatization)
- गौण विस्तारण (Secondary Elaboration)

संक्षेपण — संक्षेपण वह कार्य-पद्धति है जिसके द्वारा अचेतन की एक समान गुणों वाली अनेक इच्छायें आपस में मिलकर एक लघु या संक्षिप्त रूप बना लेती है और स्वप्न के व्यक्त विषय के रूप में अभिव्यक्त होती है। अर्थात् व्यक्त विषय की एक घटना, वस्तु या व्यक्ति अचेतन के कई इच्छाओं का एक संक्षिप्त रूप होता है।

विस्थापन — विस्थापन के द्वारा स्वप्न का रूप विकृत या परिवर्तित हो जाता है। विस्थापन वैसी कार्य-पद्धति है, जिसमें अचेतन की इच्छा संबंधित व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रकट न होकर, स्वप्न में किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रकट होती है। इसके कारण एक वस्तु का मान-मूल्य अन्य वस्तुओं की ओर स्थानान्तरित हो जाता है जिससे स्वप्न देखने वाले को स्वप्न का विषय परिवर्तित होकर दिखाई पड़ता है। जैसे — एक व्यक्ति स्वप्न में देखता है कि वह अपने मामा की हत्या कर देता है, जबकि वास्तव में वह उन्हें काफी इज्जत एवं स्नेह देता था। स्वप्न विश्लेषण से पता चला कि उसके अचेतन में अपने पिता के हत्या की इच्छा थी क्योंकि उसके पिता एक क्रूर एवं अनैतिक व्यक्ति थे। यहाँ पिता की हत्या करने की उसकी अचेतन की इच्छा मामा पर विस्थापित हो गयी थी।

Scanned with CamScanner

■ **प्रतीकीकरण** — स्वप्न के स्वरूप को विकृत करने की एक प्रमुख विधि है। इसके द्वारा अचेतन की दमित अनैतिक एवं कामुक इच्छाएँ अपना रूप बदलकर कुछ विशेष प्रतीकों के रूप में प्रकट होती हैं। स्वप्न में देखे गये भिन्न-भिन्न प्रतीक अचेतन के अव्यक्त विषय या इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इससे अचेतन की निन्दनीय इच्छाओं की अभिव्यक्ति सरल हो जाती है और परा अहं भी इसकी अभिव्यक्ति में बाधा नहीं पहुँचाता है। फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'स्वप्न-विश्लेषण' में इन प्रतीकों की एक लंबी सूची दी है। जैसे — छाता, डंडा, पेन, केला आदि को पुरुष लिंग, तथा जहाज, नाव, गुफा आदि को स्त्री लिंग का प्रतीक माना है।

■ **नाटकीकरण** — नाटकीकरण एक ऐसी कार्य-पद्धति है जिसके कारण अचेतन की कामुक एवं अनैतिक इच्छाएँ दृश्य या चल-चित्र के रूप में स्वप्नों में प्रकट होते हैं। ये दृश्य, श्रव्य, स्वाद, स्पर्श तथा गंध के रूप में हो सकते हैं। इस नाटकीयता के कारण स्वप्न के विषय इतने बदल जाते हैं कि उनका सही-सही अर्थ जानना बहुत ही कठिन हो जाता है।

■ **गौण विस्तारण** — स्वप्न के व्यक्त विषय की घटनाएँ प्रायः असंगत, निरर्थक एवं अतार्किक मालूम पड़ती हैं। अर्थात् विभिन्न घटनाओं तथा दृश्यों के बीच कुछ निश्चित संबंध नहीं होता है। जैसे — स्वप्न में व्यक्ति एक पल में लंदन में घूमते देखता है और दूसरे ही पल जंगल में जानवरों से घिरा हुआ खुद को देखता है जिनका आपस में कोई संबंध नहीं होता है। परंतु जब नींद खुलती है, और वह अर्धचेतन अवस्था में होता है तो स्वप्न की इन कड़ियों को आपस में जोड़ना प्रारंभ कर देता है। इस प्रक्रिया को गौण विस्तारण कहा जाता है। अर्थात् गौण विस्तारण वह कार्य-पद्धति है, जो स्वप्न समाप्ति के बाद प्रारंभ होती है और स्वप्न के अतार्किक एवं असंगत दृश्यों को संगत एवं तार्किक घटना में बदल देती है, जिससे हम अव्यक्त विषय की स्पष्ट पहचान नहीं कर पाते हैं।

Scanned with CamScanner

स्वप्न के सिद्धान्त :

- अलौकिक सिद्धान्त (Supernatural Theory)
- दैहिक सिद्धान्त (Physiological Theory)
  - प्रत्यक्षीकरण भ्रम सिद्धान्त (Perception-Illusion Theory)
  - आत्मबोध या प्रबोध प्रयत्न एवं भूल सिद्धान्त (Apperceptive Trial & Error Theory)
- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त (Psychological Theory)

स्वप्न का अलौकिक सिद्धान्त :-

यह सबसे प्राचीन स्वप्न सिद्धान्त है, जिसका आधार प्राचीन विश्वास है। प्राचीन दार्शनिकों एवं धार्मिक विद्वानों का मानना था कि स्वप्न व्यक्ति दैवीय या अलौकिक शक्ति के प्रभाव के कारण देखते हैं जब देवी-देवता प्रसन्न होते है, तो व्यक्ति सुखद एवं आनन्ददायक स्वप्न देखता है। और जब वे अप्रसन्न होते हैं, तो व्यक्ति बुरे एवं दुखद स्वप्न देखता है। इन विद्वानों का यह भी मत था कि निद्रावस्था में व्यक्ति की आत्मा उसके शरीर से निकलकर भ्रमण करती है और वह जो कुछ भी देखती या सुनती है, वही व्यक्ति स्वप्न में देखता है या अनुभव करता है।

स्वप्न का यह सिद्धान्त आज मान्य नहीं है, फिर भी कुछ लोग एवं जनजातिय क्षेत्रों के लोग आज भी इस

सिद्धान्त को मानते हैं। परन्तु इससे स्वप्न की वैज्ञानिक व्याख्या संभव नहीं है।

APPOINTMENTS

स्वप्न का शारीरिक सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न शारीरिक उत्तेजनाओं का एक मानसिक अभिव्यक्ति है। नींद के दौरान बाह्य उत्तेजनाओं के कारण शरीर के अंदर कुछ आंगिक परिवर्तन होते हैं और उन्हीं परिवर्तनों के कारण व्यक्ति स्वप्न देखता है। इसे निम्नांकित दो भागों में बाँटा गया है —

* प्रत्यक्षण भ्रम सिद्धान्त
* प्रतीकात्मक प्रयत्न एवं भूल सिद्धान्त

* **प्रत्यक्षण भ्रम सिद्धान्त :—** इस सिद्धान्त के अनुसार नींद की अवस्था में व्यक्ति की चेतना निष्क्रिय हो जाती है साथ ही उच्च तंत्रिका-तंत्र की क्रिया भी मंद पड़ जाती है। जिस कारण व्यक्ति को बाह्य उद्दीपकों का गलत प्रत्यक्षण होता है तथा साहचर्य की क्रियाएँ भी शिथिल हो जाती हैं। परिणाम यह होता है कि इस अवस्था में बाह्य उद्दीपक जब ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करता है और तंत्रिका आवेग मस्तिष्क तक जाती है, और वहाँ निष्क्रियता के कारण उसका सही अर्थ नहीं जुड़ पाता और व्यक्ति को वास्तविक प्रत्यक्षीकरण न होकर भ्रम हो जाता है, जो हमारे स्वप्न का आधार बनता है। इससे स्वप्न में प्रत्यक्षण का स्वरूप भ्रमात्मक होता है। इसीकारण इस सिद्धान्त को प्रत्यक्षण भ्रम सिद्धान्त कहा जाता है। जैसे— निद्रावस्था में जब व्यक्ति के चेहरे पर पानी की छींटें डाली जाती हैं तो उसे नदी में डूबने या पानी में भीगने का अनुभव होता है। इसीप्रकार, नींद में व्यक्ति के हाथ या पैर रजाई की रस्सी में फँस जाते हैं तो उसे किसी जाल में फँसने का अनुभव होता है।

NOTES

* **प्रतीकात्मक प्रयत्न एवं भूल सिद्धान्त :—** इस सिद्धान्त के अनुसार नींद की अवस्था में बाहरी एवं आंतरिक उत्तेजनाओं-

Scanned with CamScanner

का प्रभाव हमारे शरीर के अंगों पर पड़ता है, जिसका सही सही अर्थ स्नायु केन्द्र नहीं लगा पाता है, क्योंकि इस समय स्नायुमंडल की शक्ति सुषुप्त होती है। इसप्रकार उद्दीपकों के अर्थों को समझने में अनेक भूलें होती हैं। इसीकारण इस सिद्धान्त का नाम संप्रत्यक्ष या प्रत्यावर्तक प्रयत्न एवं मूल सिद्धान्त कहा जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निद्रावस्था में जब कोई बाह्य या आंतरिक उत्तेजना द्वारा हमारे शारीरिक अंगों में परिवर्तन उत्पन्न होता है, तो उससे हम स्वप्न देखते हैं।

दैहिक सिद्धान्त के प्रमुख समर्थक गेलन, हाब्स, किंग सार्जेन्ट, इमैन्युअल कान्ट आदि हैं।

Galen के शब्दों में स्वप्न शरीर की अवस्थाओं को बतलाते हैं।

Thomas Hobbes – स्वप्न शारीरिक उद्दीपकों का परिणाम है।

Sargent – "स्वप्नद्रष्टा द्वारा स्वप्न में उत्तेजनाओं को ग्रहण किया जाता है परन्तु उसका सोया हुआ मन उन उत्तेजनाओं का अर्थ सही ढंग से समझने में असफल रहता है।"

सार्जेन्ट ने एक प्रयोग करके दिखाया – जब प्रयोज्य को निद्रावस्था में इत्र सुंघाया गया और नींद खुलने पर वह बतलाया कि वह अपनी पत्नी के लिए दुकान से इत्र खरीदने के लिए गया था परन्तु पैसा कम होने के कारण ऐसे ही घर लौट आया।

Immanuel Kant – ने पेट में गड़बड़ी को स्वप्न का कारण माना है। इन्होंने एक उदाहरण दिया जिसमें एक विद्यार्थी को जब-जब दाँत में दर्द होता था तो वह अपने चोर को मुँह में थप्पड़ मार-मारकर उसके दाँत तोड़ते स्वप्न में देखता था।

Horton ने स्वप्न को प्रत्यक्ष ज्ञान का गलत रूप कहा है। एक उदाहरण से बतलाया कि – किसी व्यक्ति के कान में गड़बड़ी थी, जिसके कारण उसका मस्तिष्क अस्त-व्यस्त रहता था तथा उससे बिजली की गर्जना से संबंधित अनेक स्वप्न दिखाई पड़ते थे।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि शारीरिक सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न का आधार दैहिक होता है।

NOTES

Scanned with CamScanner